बैठ दो घड़ी अकेला | by Riyaz Hindustani

बैठ अकेला दो घड़ी भगवान् का गुण गाया कर।।
मन मंदिर में ऐ जिया झाड़ू रोज़ लगाया कर।।
बैठ अकेला दो घड़ी भगवान् का गुण गाया कर।।
मन मंदिर में ऐ जिया झाड़ू रोज़ लगाया कर।।

सोने में तो रैन गुज़री दिन भर करता पाप रहा
इसी तरह बर्बाद ज़िंदगी करता अपने आप रहा
छोड़ कुसंगति को ज़रा .....
छोड़ कुसंगति को ज़रा सत्संग में तू जाया कर
बैठ अकेला दो घड़ी भगवान् का गुण गाया कर।।
मन मंदिर में ऐ जिया झाड़ू रोज़ लगाया कर।।

पास तेरे है दुनिया कोई तूने मौज उड़ाई क्या
भूखा प्यासा पड़ा पडोसी तूने रोटी खाई क्या
पहले सबसे पूछ कर ....
पहले सबसे पूछ कर भोजन तू फिर खाया कर
बैठ अकेला दो घड़ी भगवान् का गुण गाया कर।।
मन मंदिर में ऐ जिया झाड़ू रोज़ लगाया कर।।

नर्तन के चोले को पाना बचो का कोई खेल नहीं
जनम जनम के शुभ कर्मो का होता जबतक मेल नहीं
नर्तन पाने के लिए ......
नर्तन पाने के लिए उत्तम कर्म कमाया कर
बैठ अकेला दो घड़ी भगवान् का गुण गाया कर।।
मन मंदिर में ऐ जिया झाड़ू रोज़ लगाया कर।।

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%ac%e0%a5%88%e0%a4%a0-%e0%a4%a6%e0%a5%8b-%e0%a4%98%e0%a4%a1%e0%a4%bc%e0%a5%80-%e0%a4%85%e0%a4%95%e0%a5%87%e0%a4%b2%e0%a4%be-by-riyaz-hindustani/